UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

हिन्दी अनिवार्य

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

हिन्दी (अनिवार्य)(01)

MODEL PAPER (RBSE) 1

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खंड 'अ'

1. बहुविकल्पी प्रश्न-

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए-

साहित्य का आधार जीवन है। इसी आधार पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है। उसकी अटारियाँ, मीनार और गुंबद बनते हैं। लेकिन बुनियाद मिट्टी के नीचे दबी पड़ी है। जीवन परमात्मा की सृष्टि है, इसलिए सुबोध है, सुगम है और मर्यादाओं से परिमित है। जीवन परमात्मा को अपने कामों का जवाबदेह है या नहीं हमें मालूम नहीं, लेकिन साहित्य मनुष्य के सामने जवाबदेह है। इसके लिए कानून है जिनसे वह इधर-उधर नहीं जा सकता। मनुष्य जीवनपर्यंत आनंद की खोज में लगा रहता है। किसी को यह रत्न, द्रव्य में मिलता है, किसी को भरे-पूरे परिवार में, किसी को लंबे-चौड़े भवन में, किसी को ऐश्वर्य में लेकिन साहित्य का आनंद इस आनंद से ऊँचा है। उसका आधार सुंदर और सत्य है। वास्तव में सच्चा आनंद सुंदर और सत्य से मिलता है, उसी आनंद को दर्शाना वही आनंद उत्पन्न करना साहित्य का उद्देश्य है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है- [1]

(अ) साहित्य की दीवार (ब) जीवन साहित्य
(स) साहित्य का आधार: जीवन (द) जीवन

(ii) साहित्य और जीवन में गहरा संबंध है क्योंकि- [1]

(अ) जीवन का मुख्य आधार साहित्य है
(ब) साहित्य जीवन की मजबूत दीवार है
(स) साहित्य का आधार जीवन है
(द) साहित्य का आनंद जीवन से ऊँचा है

(iii) मनुष्य किसकी खोज में जीवन भर लगा रहता है- [1]

(अ) परमात्मा की
(ब) आनंद की
(स) साहित्य की
(द) रत्न, द्रव्य, भरे पूरे परिवार, लंबे चौड़े भवन एवं ऐश्वर्य को पाने की

(iv) साहित्य के आनंद का आधार है- [1]

(अ) सुंदर और सत्य को पाना (ब) जीवन
(स) रत्न और ऐश्वर्य पाना (द) परमात्मा

(v) परिमिति का अर्थ है- [1]

(अ) सीमित (ब) दबा हुआ
(स) विस्तृत (द) फँसा हुआ

(vi) जीवन किसकी सृष्टि है? [1]

(अ) मनुष्य की (ब) आत्मा की
(स) परमात्मा की (द) परिवार की

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए-

ऋषि-मुनियों, साधु-संतों को
नमन, उन्हें मेरा अभिनंदन।
जिनके तप से पूत हुई है
भारत देश की स्वर्णिम माटी
जिनके श्रम से चली आ रही
युग-युग से अविरल परिपाटी।
जिनके संयम से शोभित है
जन-जन के माथे पर चंदन।
कठिन आत्म-मंथन के हित
जो असि-धारा पर चलते हैं।
पर-प्रकाश हित पिघल-पिघल कर
मोम-दीप-सा जलते हैं।
जिनके उपदेशों को सुनकर
सँवर जाए जन-जन का जीवन।
सत्य-अहिंसा जिनके भूषण
करूणामय है जिनकी वाणी
जिनके चरणों से है पावन
भारत की यह अमिट कहानी।
उनके ही आशीष, शुभेच्छा,
पाने को करता पद-वंदन।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(vii) ऋषि-मुनि, साधु-संत नमन करने योग्य क्यों हैं? [1]
(अ) धार्मिक विश्वास के कारण
(ब) तप, श्रम और संयम का आदर्श प्रस्तुत करने के कारण
(स) उच्च शिक्षा का पालन करने के कारण
(द) देश में धर्म-संस्कृति का प्रचार करने के कारण

(viii) ऋषि-मुनि अपनी किन विशेषताओं के कारण वंदनीय है?[1]
(अ) सत्य (ब) अहिंसा
(स) मधुर-वाणी (द) उपर्युक्त सभी

(ix) उपर्युक्त काव्यांश का उचित शीर्षक है- [1]
(अ) भारत के ऋषि-मुनि (ब) अभिनंदन
(स) स्वर्णिम माटी (द) आत्म-मंथन

(x) 'असि धारा पर चलते है' पंक्ति से क्या आशय है? [1]
(अ) लोकहित में स्वयं कष्ट झेलना
(ब) युद्ध के लिए तैयार रहना
(स) तलवार को सदैव अपने पास रखना
(द) हथियारों की धार पर चलना

(xi) जन-जन का जीवन कैसे सँवर जाता है? [1]
(अ) उच्च आचरण द्वारा
(ब) ऋषि – मुनियों के उपदेशों को सुनकर
(स) सत्य और अहिंसा को अपनाकर
(द) दूसरों के आशीर्वाद द्वारा

(xii) निम्न में से 'वाणी' का पर्यायवाची कौनसा नहीं है? [1]
(अ) वचन (ब) उक्ति
(स) सरस्वती (द) भानु

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
(i) भाषा का क्षेत्रीय रूप .....कहलाता है। [1]
(ii) बोलना तथा सुनना .....भाषा के अंतर्गत आता है। [1]
(iii) 'अनिल ने सुनील से कहा तुम बैल हो' वाक्य में.....शब्द-शक्ति है। [1]
(iv) अभिधा और लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर ..... शब्द-शक्ति के माध्यम से शब्द का अर्थ ग्रहण किया जाता है। [1]
(v) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को .....कहते है।[1]
(vi) 'काली घटा का घमण्ड घटा, नभ-मण्डल तारक-वृन्द लिखे।' काव्य-पंक्ति में .....अलंकार है। [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए-
(i) निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखिए- [1]
A- Applicant- B- Legal-
(ii) 'वरीयता' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द लिखिए। [1]
(iii) पत्रकारिता किसे कहते हैं? [1]
(iv) मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा किसलिए जाने जाते हैं? [1]
(v) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना किसे कहा जा सकता है? [1]
(vi) यशोधर बाबू मूलत: कहाँ के रहने वाले थे? [1]
(vii) 'जूझ' उपन्यास का नायक मास्टर जी की किस कविता से प्रेरित होकर कविता लिखने का प्रयास करता है? [1]
(viii) ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में क्या लिपिबद्ध किया है? [1]
(ix) आनंदा ने दत्ता जी राव को यह क्यों कहा कि वह उसके आने की बात दादा को न बताए? [1]
(x) रघुवीर सहाय की दो रचनाओं के नाम लिखिए। [1]
(xi) 'इंदर सेना' को लेखक ने क्या नाम दिया है? [1]

खंड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिए-

4. प्रिंट मीडिया के लाभ कौन-कौन-से हैं? [2]
5. ब्रेकिंग न्यूज से क्या अर्थ है? [2]
6. 'खेल के क्षेत्र में उभरता भारत' विषय पर एक फ़ीचर तैयार कीजिए। [2]
7. 'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य बताइए। [2]
8. "हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे" पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया हैं? [2]
9. 'भक्तिन' अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी जी के लिए अनमोल क्यों थी? [2]
10. 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था? [2]

खंड 'स'

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

11. "नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह,
जैसे हिल रही हो।"
उपर्युक्त बिम्ब द्वारा कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य का चित्रण किया है। क्या इस अंश में प्रयुक्त उपमान आपको उपयुक्त प्रतीत होते हैं? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता हैं- कविता की समीक्षा कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

12. 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर 'बाज़ार के जादू' को स्पष्ट करते हुए उससे बचने के उपाय बताइए।(उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

'नमक' कहानी में हिंदुस्तान-पाकिस्तान में रहने वाले लोगों की भावनाओं, संवेदनाओं को उभारा गया है। वर्तमान संदर्भ में इन संवेदनाओं की स्थिति को तर्क सहित स्पष्ट कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

13. कुँवर नारायण का कवि परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) [4]

अथवा

धर्मवीर भारती का लेखक परिचय लिखिए।(उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) [4]

14. यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशन दा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन की दिशा देने में

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

किसका महत्वपूर्ण योगदान रहा और कैसे? 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आधार उत्तर दीजिए।(उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) [6]

अथवा

लेखक की माँ उस नारी जाति की प्रतीक है जो पुरूषों द्वारा सदैव प्रताड़ित होते हुए भी कुछ नहीं कर पाती। 'जूझ' पाठ के आधार पर प्रमाण सहित सिद्ध कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) [6]

खंड 'द'

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-[2+4=6]

पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास।

अथवा

रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली
छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी
बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे
भाई के है बाँधती चमकती राखी

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-[2+4=6]

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है!

अथवा

शकुन्तला बहुत सुन्दर थी। सुन्दर क्या होने से कोई हो जाता है? देखना चाहिए कि कितने सुंदर हृदय से वह सौन्दर्य डुबकी लगाकर निकला है। शकुन्तला कालिदास के हृदय से निकली थी। विधाता की ओर से कोई कार्पण्य नहीं था, कवि की ओर से भी नहीं। राजा दुष्यन्त भी अच्छे-भले प्रेमी थे। उन्होंने शकुन्तला का एक चित्र बनाया था; लेकिन रह-रहकर उनका मन खीझ उठता था। उहूँ, कहीं-न-कहीं कुछ छूट गया है। बड़ी देर के बाद उन्हें समझ में आया कि शकुन्तला के कानों में वे उस शिरीष पुष्प को देना भूल गए हैं, जिसके केसर गंडस्थल तक लटके हुए थे।

17. अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े लेखकों और कलाकारों के पारिश्रमिक में वृद्धि के लिए प्रेस विज्ञप्ति तैयार कीजिए।[4]

अथवा

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के दिनों में ध्वनि विस्तार यंत्रों के बजाने पर जारी की गयी सरकारी निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध दण्डात्मक कार्यवाही हेतु राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष की ओर से जयपुर के नगर दण्डनायक को लिखे जाने वाले अर्द्ध-शासकीय पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।

18. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए। (शब्द सीमा 300 शब्द) [5]

(1) हिन्दी : हमारी राष्ट्रभाषा
(2) स्त्री सशक्तीकरण और शिक्षा
(3) सूचना एवं संचार की महाक्रान्ति : इण्टरनेट
(4) राजस्थान में गहराता जल-संकट

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

उत्तरमाला मॉडल पेपर – 01

खंड 'अ'

1. **(i) [स]** साहित्य का आधार: जीवन
(ii) [स] साहित्य का आधार जीवन है
(iii) [ब] आनंद की
(iv) [अ] सुंदर और सत्य को पाना
(v) [अ] सीमित
(vi) [स] परमात्मा की
(vii) [ब] तप, श्रम और संयम का आदर्श प्रस्तुत करने के कारण
(viii) [द] उपर्युक्त सभी
(ix) [अ] भारत के ऋषि-मुनि
(x) [अ] लोकहित में स्वयं कष्ट झेलना
(xi) [ब] ऋषि – मुनियों के उपदेशों को सुनकर
(xii) [द] भानु

2. **(i)** बोली **(ii)** मौखिक **(iii)** लक्षणा
(iv) व्यंजना **(v)** अलंकार **(vi)** यमक

3.
(i) **A- Applicant-** आवेदक **B- Legal-** कानूनी
(ii) 'वरीयता' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द है- Weightage
(iii) रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट किसी भी माध्यम से प्रिंट (मुद्रित) खबरों के संचार को पत्रकारिता कहते हैं।
(iv) मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा सिंधु घाटी की प्राचीन सभ्यता के स्मारक नगर होने के कारण जाने जाते हैं।
(v) 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कहा जा सकता है।
(vi) यशोधर बाबू मूलत: कुमाऊँ के रहने वाले थे।
(vii) 'जूझ'उपन्यास का नायक मास्टर जी की 'मालती की लता' कविता से प्रेरित होकर कविता लिखने का प्रयास करता है।
(viii) ऐन फ्रैंक ने द्वितीय महायुद्ध काल में गुप्त आवास में बिताए दो वर्षों का जीवन अपनी डायरी में लिपिबद्ध किया है।
(ix) आनंदा को डर था कि अगर दादा को सच्चाई पता लगी तो उसकी और माँ की खैर नहीं।
(x) आत्म हत्या के विरुद्ध, सीढ़ियों पर धूप आदि रघुवीर सहाय की रचनाओं के नाम है।
(xi) 'इंदर सेना' को लेखक ने मेंढ़क-मंडली नाम दिया है।

खंड 'ब'

4. प्रिंट माध्यम के लाभ निम्न है-
(i) प्रिंट मीडिया को धीरे-धीरे, दुबारा या मर्जी के अनुसार पढ़ा जा सकता है।
(ii) किसी भी पृष्ठ या समाचार को पहले या बाद में पढ़ा जा सकता है।

5. ब्रेकिंग न्यूज का दूसरा नाम फ़्लैश भी है। इसके अंतर्गत अत्यंत महत्वपूर्ण या बड़े समाचार को कम-से-कम शब्दों में दर्शकों तक तत्काल पहुँचाया जाता है, जैसे नेपाल में आया भीषण भूकंप। दो रेलगाड़ियों में टक्कर, दस मरे, सैकड़ों घायल।

6. सरकार ने खेलों के विकास के लिए कई कल्याणकारी तथा उत्कृष्ट योजनाओं एवं कार्यक्रमों की शुरुआत की है। यह सच है कि पिछले वर्ष में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की योग्यता रखने वाले खिलाड़ियों ने सफलता हासिल की है। उन्हीं के कारण हमारा देश खेल के क्षेत्र में उभरता हुआ दिखाई देता है। हमारे देश में खेल के क्षेत्र की उपलब्धियाँ अत्यंत क्षीण हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि हमारे देश में प्रतिभा की भी कमी नहीं है। यदि स्वस्थ वातावरण तैयार किया जाए और चयन उचित प्रक्रिया द्वारा किया जाए, तो हम इस क्षेत्र में बहुत प्रगति कर सकते हैं।

7. 'पतंग' आलोक धन्वा की एक लंबी कविता है। इस कविता में कवि ने पतंग के बहाने बाल सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर चित्रण किया है। बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तनों को अभिव्यक्त करने के लिए सुंदर बिंबों का उपयोग किया गया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है। आसमान में उड़ती पतंग ऊँचाइयों की वे हदें है जिन्हें बालमन छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

8. इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने यही व्यंग्य किया है कि मीडिया वाले समर्थ और शक्तिवान् होते हैं। इतने शक्तिवान् कि वे किसी की करुणा को परदे पर दिखाकर पैसा कमा सकते हैं। वे एक दुर्बल अर्थात् अपाहिज को लोगों के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं ताकि लोगों की सहानुभूति प्राप्त करके प्रसिद्धि पाई जा सके।

9. भक्तिन अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी के लिए अनमोल थी क्योंकि-
(i) वह लेखिका के हर कष्ट को लेने को तैयार थी।
(ii) वह लेखिका की सेवा करती थी।

10. लुट्टन पहलवान का कोई गुरु नहीं था, यह बात सच थी। जब पहली बार वह दंगल देखने गया तो वहाँ ढोल की थाप पर दाँव-पेंच चल रहे थे। पहलवान ने इन थापों को ध्यान से सुना और उसमें अजीब-सी ऊर्जा भर गई। उसने चाँद सिंह को ललकारा और उसे चित कर दिया। ढोल की थाप ने उसे दंगल लड़ने की प्रेरणा दी और वह जीत गया। इसीलिए उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं बल्कि यही ढोल है।

खंड 'स'

11. इस शब्द-चित्र द्वारा कवि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रात:कालीन आकाश के दृश्य को साकार करना चाहा है। सूर्योदय से पहले आकाश में कुछ समय के लिए पीला प्रकाश दिखाई देता है। नीले आकाश में झिलमिलाता यह पीला प्रकाश कवि को उपयुक्त बिम्ब की रचना को प्रेरित करता है। कवि द्वारा चुने गए उपमान प्राकृतिक दृश्य के अनुरूप ही है। नीला आकाश, नीला जल है और पीला प्रकाश जल में झिलमिलाती किसी गोरी रमणी की देह है। निरंतर होते दृश्य परिवर्तन को कवि ने 'हिलती' शब्द द्वारा व्यक्त किया है। अत: इस बिम्ब में प्रयुक्त उपमान दृश्य के अनुरूप और उसमें पूर्णता तथा प्रभाव उत्पन्न करने वाले हैं।

अथवा

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता अपनेपन की भावना में छिपी क्रूरता को व्यक्त करती है। सामाजिक उद्देश्यों के नाम पर अपाहिज की पीड़ा को जनता तक पहुँचाया जाता है। यह कार्य ऊपर से करुण भाव को दर्शाता है परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य

कुछ और ही होता है। संचालक अपाहिज की अपंगता दिखाता है। वह एक रोचक कार्यक्रम बनाना चाहता है ताकि उसका कार्यक्रम जनता में लोकप्रिय हो सके। उसे अपंग की पीड़ा से कोई लेना-देना नहीं है। यह कविता यह बताती है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकांश कार्यक्रम कारोबारी दबाव के कारण संवेदनशील होने का दिखावा करते हैं। इस तरह दिखावटी अपनेपन की भावना क्रूरता की सीमा तक पहुँच जाती है।

12. बाज़ार में जादू होता है। इसका तात्पर्य यह है कि बाज़ार अपनी प्रदर्शन दक्षता के कारण ग्राहकों को लुभाता है तथा उनको चीजें खरीदने के लिए प्रोत्साहित करता है। बाज़ार का आकर्षण अत्यन्त प्रबल होता है। उसमें पड़कर मनुष्य उन चीजों को भी खरीद लेता है, जो उसके लिए जरूरी नहीं होती।

बाज़ार के जादू से बचने के लिए आवश्यक है कि बाज़ार जाने से पहले सोचें कि हमें किस चीज की जरूरत है। इस प्रकार हम जरूरी चीज ही खरीदेंगे तथा बाज़ार के आकर्षण का प्रभाव हम पर नहीं पड़ेगा। हमें बाज़ार को आवश्यकता पूर्ति का स्थान मानना चाहिए। उसे अपनी क्रय-शक्ति को प्रदर्शन करने तथा अपने घमंड के प्रदर्शन का स्थान नहीं मानना चाहिए। ऐसा करके हम बाज़ार के जादू से बच सकेंगे तथा उसका सही उपयोग कर सकेंगे।

अथवा

लोगों की भावनाएँ और संवेदनाएँ आज भी वैसी ही हैं जैसी 58-60 वर्ष पहले थीं। लोग आज भी उतनी ही मुहब्बत एक-दूसरे मुल्कों के बाशिंदों की करते हैं। आज हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों ही देशों ने आपसी भाईचारे को बढ़ाने और कायम रखने के लिए नई-नई योजनाएँ बनाई हैं। बस, रेल यातायात पुनः शुरू कर दिया है। जो दोनों देशों की एकता को दर्शाता है। यहाँ के लोग आपसी दुख दर्द बाँटते हैं। पिछले 5-7 वर्षों में तो दोनों के बीच रिश्ते अधिक मजबूत हुए हैं। दोनों में आपसी सौहार्द बढ़ा है।

13. कवि कुँवर नारायण का जन्म सन् 1927 ई. में हुआ। हिन्दी में 'नई कविता' का दौर चल रहा था। कुँवर नारायण ने अपनी रचनाओं में 'तीसरे तारसप्तक' नामक नई कविता के कवियों के काव्य संग्रह में प्रमुख स्थान प्राप्त किया। कुंवर नारायण केवल कवि ही नहीं हैं। उन्होंने कहानियाँ, लेख तथा फिल्मों पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं।

कविता के प्रति कुँवर नारायण का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। वे भावुकता से बचकर काव्य-रचना करते रहे।

रचनाएँ- कुँवर नारायण के प्रमुख कविता-संग्रह हैं-चक्रव्यूह, अपने सामने, इन दिनों, परिवेश हम तुम, कोई दूसरा नहीं। उन्होंने 'वाजश्रवा ये बहाने' तथा 'आत्मजयी' नामक दो खण्ड काव्य भी लिखे हैं। 'आकारों के आस-पास' इनका कहानी संग्रह है। 'आज और आज से पहले' इनका समालोचना संग्रह है।

अथवा

धर्मवीर भारती का जन्म सन् 1926 में इलाहाबाद (उ.प्र.) में हुआ था। उनकी कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, निबंध, गीतिनाट्य और रिपोर्ताज हिन्दी साहित्य की उपलब्धियाँ हैं। वे मूल रूप से व्यक्ति-स्वातंत्र्य, मानवीय संकट एवं रोमानी चेतना के रचनाकार हैं। उनकी प्रमुख **रचनाएँ** 'कनुप्रिया', 'सात-गीत वर्ष', 'ठंडा लोहा' (कविता संग्रह); 'बंद गली का आखिरी मकान' (कहानी-संग्रह); 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'गुनाहों का देवता' (उपन्यास) आदि हैं। पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य से जुड़े अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुए हैं। सन् 1997 में उनका निधन हो गया था।

14. यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशन दा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मेरे जीवन पर मेरे बड़े भाई साहब का प्रभाव है। वे बड़े शिक्षाविद हैं। उन्होंने हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। उन्हें कई विषयों का गहन ज्ञान है। परिवार वाले उन्हें इंजीनियर बनाना चाहते थे, परंतु उन्होंने साफ़ मना कर दिया तथा शिक्षक बनना स्वीकार किया। आज वे विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर हैं। उनके विचार व कार्यशैली ने मुझे प्रभावित किया। मैंने निर्णय किया कि मुझे भी उनकी तरह मेहनत करके आगे बढ़ना है। मैंने पढ़ाई में मेहनत की तथा अच्छे अंक प्राप्त किए। मैंने स्कूल की सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेना शुरू कर दिया। कई प्रतियोगिताओं में मुझे इनाम भी मिले। मेरे अध्यापक प्रसन्न हैं। मैं बड़े भाई की सरलता व सादगी से बहुत प्रभावित हूँ, इसीलिए उनके जैसा बनना चाहता हूँ।

अथवा

लेखक की माँ उस निरीह नारी जाति की प्रतीक है जो अपने पति के हर तरह के अन्याय को सिर नीचा करके सहती रहती है। वह उससे डरती है क्योंकि उसका पति सदैव ही उससे मारपीट करता रहता है। अपने पुत्र की पढ़ाई की इच्छा व्यक्त करने पर वह उसे डराती है कि तेरा पिता सुन लेगा तो हम दोनों की हड्डी – पसली एक कर देगा। वह चाहते हुए भी अपने पुत्र की मदद नहीं कर पाती। बहुत हिम्मत करके अपने पुत्र की पढ़ाई के लिए राव साहब के पास जाती है। वह उनसे प्रार्थना करती है कि उसके पति को यह पता नहीं चल जावे कि वह उनके पास आई थी। इस प्रकार लेखक की माँ दबी, कुचली विवश नारी की प्रतीक बनकर सामने आती है।

खंड 'द'

15. **संदर्भ-** प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित कविता 'पतंग' से लिया गया है। इस कविता के रचयिता आलोक धन्वा हैं।

प्रसंग- इस कविता में कवि ने प्रकृति में आने वाले परिवर्तनों व बालमन की सुलभ चेष्टाओं का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि आकाश में अपनी पतंगों को उड़ते देखकर बच्चों के मन भी आकाश में उड़ रहे हैं। उनके शरीर के रोएँ भी संगीत उत्पन्न कर रहे हैं तथा वे भी आकाश में उड़ रहे हैं।

कभी-कभार वे छतों के किनारों से गिर जाते हैं, परंतु अपने लचीलेपन के कारण वे बच जाते हैं। उस समय उनके मन का भय समाप्त हो जाता है। वे अधिक उत्साह के साथ सुनहरे सूरज के सामने फिर आते हैं। दूसरे शब्दों में, वे अगली सुबह फिर पतंग उड़ाते हैं। उनकी गति और अधिक तेज हो जाती है। पृथ्वी और तेज गति से उनके बेचैन पैरों के पास आती है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

विशेष-
(i) बच्चे खतरों का सामना करके और भी साहसी बनते हैं, इस भाव की अभिव्यक्ति है।
(ii) मुक्त छंद का प्रयोग है।
(iii) मानवीकरण, अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(iv) दृश्य बिंब है और भाषा में लाक्षणिकता है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'रुबाइयाँ' से उद्धृत है। इसके रचयिता उर्दू-फ़ारसी के प्रमुख शायर फिराक गोरखपुरी हैं।
प्रसंग- इसमें रक्षाबंधन पर्व का वर्णन प्रकृति के माध्यम से किया गया है।
व्याख्या- कवि कहता है कि रक्षाबंधन की सुबह आनंद व मिठास की सुबह है। यह दिन मीठे बंधन का दिन है। सावन का महीना है। आकाश में काले-काले बादलों की हल्की घटाएँ छाई हुई हैं। इन बादलों में बिजली चमक रही है। इसी तरह राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हैं। बहिन अपने भाई की कलाई पर चमकीली राखी बाँधती है।
विशेष–
(i) रक्षाबंधन के त्योहार का प्रभावी चित्रण है।
(ii) उर्दू-हिंदी मिश्रित भाषा है।
(iii) 'हलकी-हलकी' में पुनरुक्ति प्रकाश तथा 'बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे' में उपमा अलंकार है।

16. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्रकुमार के 'बाज़ार दर्शन' निबन्ध से लिया गया है।
प्रसंग- इसमें बाज़ार के जादू के प्रभाव का रोचक वर्णन किया गया है।
व्याख्या- लेखक बताता है कि बाज़ार का जादू आँखों के रास्ते मन पर प्रभाव डालता है, तब मन में चाह उत्पन्न हो जाती है। बाज़ार में वह जादू रूप-सौन्दर्य का होता है। जैसे चुम्बक लोहे को ही अपनी ओर खींचता है, अन्य वस्तुओं को नहीं। उसी प्रकार बाज़ार का जादू भी एक सीमा तक ही प्रभाव छोड़ता है। जब बाज़ार में व्यक्ति की जेब भरी हो, उसके पास रुपये हों और मन खाली अर्थात् खरीददारी करने में निश्चित वस्तु का क्रय करने का लक्ष्य न हो, तो ऐसे में बाज़ार के जादू का उस पर जल्दी प्रभाव पड़ता है। परन्तु जब जेब खाली और मन भरा हुआ हो, तो भी उस पर कुछ जादू चल जायेगा, अर्थात् वह केवल आवश्यकता की चीजें खरीदने में संकोच नहीं करेगा। मन खाली हो, अर्थात् मन में किसी चीज की खरीददारी करने में भटकाव या लक्ष्यहीनता हो, तो वह अनेकानेक चीजें खरीदने के लिए लालायित हो जाता है।
विशेष-
(i) बाज़ार के आकर्षण को जादू के समान बताया है।
(ii) विषयानुकूल, मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है।
(iii) शैली व्याख्यात्मक है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'शिरीष के फूल' निबन्ध से अवतरित है।
प्रसंग- लेखक की दृष्टि में कालिदास स्थिरप्रज्ञ और विदग्ध प्रेमी थे। उसी से वे शकुन्तला के अनिन्द्य सौन्दर्य का चित्रण कर सके।
व्याख्या- 'अभिज्ञानशाकुलन्तम्' नाटक की नायिका शकुन्तला अनुपम सुन्दरी थी। परन्तु कोई केवल शरीर से ही सुन्दर नहीं हो जाता है, अपितु देखने वाले का भी या अनुपम सौन्दर्य की रचना करने वाले का भी वैसा सुन्दर हृदय होना चाहिए। सुन्दर भावों वाला हृदय ही अनुपम सौन्दर्य का चित्रण कर पाता है। कालिदास ने भी शकुन्तला के सौन्दर्य का चित्रण अपने हृदय के समस्त सुन्दर भावों से किया था। वह उनके हृदय से उत्पन्न हुई रचना थी। वैसे विधाता ने शकुन्तला को सुन्दरता देने में कोई कंजूसी नहीं की थी और कवि ने भी उसके सौन्दर्य-चित्रण में कोई कमी नहीं रखी थी। राजा दुष्यन्त भी अच्छे-भले प्रेमी थे। उन्होंने शकुन्तला का एक चित्र बनाया था, किन्तु उन्हें लगता था कि उस चित्र में कुछ कमी रह गई है। इसलिए वह रह-रहकर खींझ उठते थे। बहुत देर तक सोचने पर उन्हें ध्यान आया कि वे शकुन्तला के दोनों कानों में शिरीष के फूल के कर्णफूल बनाना भूल गये, जिसके केसर जैसे पीले रेशे शकुन्तला के गालों तक लटके हुए थे अर्थात् राजा दुष्यन्त शकुन्तला के चित्र में शिरीष के कर्णफूल बनाना भूल गये थे। इस कारण वह चित्र अपूर्ण-सा लग रहा था।
विशेष-
(i) शकुन्तला तपोवन में रहने से शिरीष-पुष्प को कर्णफूल की तरह धारण करती थी।
(ii) कवि-हृदय की सौन्दर्यानुभूति का सरस चित्रण हुआ है।
(iii) भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं तत्सम-प्रधान है। शैली भावात्मक है।

17.

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड
प्रेस विज्ञप्ति
अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े लेखकों और कलाकारों के पारिश्रमिक में वृद्धि

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड ने निर्णय लिया है कि अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े लेखकों, कलाकारों और विशेषज्ञों के पारिश्रमिक में तत्काल प्रभाव से वृद्धि कर दी जाए।
ध्यान दें कि इसके पूर्व लेखकों, कलाकारों के पारिश्रमिक में सन् 2000 में संशोधन किया गया था। पिछले कुछ समय से लेखकों और कलाकारों द्वारा यह शिकायत की जा रही थी कि संस्थान द्वारा दिए जाने वाले पारिश्रमिक की राशि बहुत कम है जिनके कारण अच्छी प्रतिभाएँ संस्थान से विमुख हो रही हैं।
लेखकों और कलाकारों की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए बोर्ड ने पारिश्रमिक की बढ़ी दरों को मंजूरी देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया है कि इससे अच्छी प्रतिभाओं को आकर्षित करने में तो मदद मिलेगी ही कार्यक्रमों की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

अथवा
अर्द्ध-शासकीय पत्र
राजस्थान सरकार

क,ख,ग
कार्यालय छात्र संघ,
जयपुर, राजस्थान।
अध्यक्ष छात्रसंघ
दिनांक : 20 जनवरी, 20XX
अर्द्ध-शासकीय पत्रांक : छास/जय/20XX-XX/112
प्रिय श्री गुप्ताजी,
विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के हितार्थ आपके कार्यालय से एक माह पूर्व ही शहर में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों के बजाने पर निषेधाज्ञा जारी कर दी गयी थी, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ध्वनि विस्तारक यन्त्रों के बजाने पर जारी की गयी सरकारी निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कोई कठोर दण्डात्मक कार्यवाही नहीं की जा रही है। फलतः रात्रि जागरण तथा मन्दिरों में रात भर ध्वनि विस्तारक यन्त्र अब भी यथावत बज रहे हैं।
अतः आपसे अनुरोध है कि छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए आप द्वारा जारी निषेधाज्ञा का कठोरता से पालन करवाने का निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को एक बार पुनः दें, ताकि इस पर वास्तव में रोक लग सके।
शुभकामनाओं सहित।

भवन्निष्ठ/आपका
हस्ताक्षर
(हस्ताक्षरकर्त्ता का नाम)

श्री रामकुमार गुप्ता,
नगर दण्डनायक,
जयपुर।
टिप्पणी : उपर्युक्त रेखांकित पद पत्र-लेखक के हाथ से लिखे गए हैं।
(i) संबोधन
(ii) शुभकामना संकेत
(iii) हस्ताक्षर

18.
(1) हिन्दी : हमारी राष्ट्रभाषा

(i) प्रस्तावना- राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान के समान ही राष्ट्रभाषा भी एक स्वतन्त्र राष्ट्र के गौरव का प्रतीक होती है। कैसी लज्जा का विषय है कि देश को स्वतन्त्र हुए अर्द्धशताब्दी से भी अधिक समय बीत चुका है और आज भी यह राष्ट्र, पराई भाषा में बात करना गौरव का विषय समझता है। क्या हमारी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है?

(ii) भारत में भाषा सम्बन्धी स्थिति- भारत एक विशाल राष्ट्र है। संविधान-निर्माताओं ने भारत की चौदह भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा मानते हुए हिन्दी को उसकी व्यापकता और परम्परागत स्थिति के कारण राष्ट्रभाषा का पद प्रदान किया था। परन्तु राजनीतिक स्वार्थों और संकुचित प्रादेशिकता ने धीरे-धीरे हिन्दी साम्राज्यवाद का हौआ दिखाकर हिन्दी-विरोध की ऐसी ज्वाला सुलगायी कि केन्द्रीय सरकार ने पूर्व निश्चित 15 वर्ष की अवधि का परित्याग करके अनिश्चितकाल तक हिन्दी- भाषी प्रदेशों को अंग्रेजी के प्रयोग की छूट दे दी।

(iii) राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता- हर देश को अपने सामान्य काम-काज एवं राष्ट्रव्यापी व्यवहार के लिए किसी एक भाषा को अपनाना होता है। राष्ट्र की कोई एक भाषा स्वाभाविक विकास और विस्तार करती हुए अधिकांश जनसमूह के विचार-विनिमय और व्यवहार का माध्यम बन जाती है। इसी भाषा को वह राष्ट्र, राष्ट्रभाषा का दर्जा देकर, उस पर शासन की स्वीकृति की मुहर लगा देता है। सरकारी कामकाज की केन्द्रीय भाषा के रूप में यदि एक भाषा स्वीकृत न होगी तो प्रशासन में नित्य ही व्यावहारिक कठिनाइयाँ आयेंगी। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में भी राष्ट्र की निजी भाषा का होना गौरव की बात होती है।

(iv) हिन्दी ही राष्ट्रभाषा क्यों?- एक राष्ट्रभाषा के लिए सर्वप्रथम गुण है- उसकी 'व्यापकता'। राष्ट्र के अधिकांश जनसमुदाय द्वारा वह बोली तथा समझी जाती हो। दूसरा गुण है- 'उसकी समृद्धता'। तीसरा गुण वह संस्कृति, धर्म, दर्शन, साहित्य एवं विज्ञान आदि विषयों को अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य रखती हो। चौथा, उसका शब्दकोश व्यापक और विशाल हो। पाँचवें, उसमें समयानुकूल विकास का सामर्थ्य हो।
यदि निष्पक्ष दृष्टि से विचार किया जाय तो हिन्दी को ये सभी योग्यताएँ प्राप्त हैं। वह देश की बहुसंख्यक जनता के नित्य व्यवहार की भाषा है। विविध विषयों पर उसमें साहित्य मौजूद है और उसे पारिभाषिक शब्दावली के लिए संस्कृत का समृद्ध सहयोग प्राप्त है। हिन्दी ने अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के आवश्यक शब्दों को निस्संकोच ग्रहण किया है। उसकी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। उसने अपने विकास और अनुकूलन की महान सामर्थ्य का सदा परिचय दिया है। अतः हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होने की सभी योग्यताएँ रखती है।

(v) हिन्दी का भविष्य- राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का भविष्य दिखाई दे रहा है। जब राष्ट्रवासी ही अपनी भाषा में बोलने में हीनता का अनुभव करेंगे तो उसका क्या भविष्य होगा। किन्तु दूसरी ओर आशा की किरणें भी दिखाई दे रही हैं। व्यावसायिक स्पर्धा के युग में कम्पनियों और प्रतिष्ठानों की यह मजबूरी बनती जा रही है कि वे अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार के लिए जनता की भाषा अपनाएँ। अत: हिन्दी को लोकमंच से निर्वासित करना आसान नहीं होगा।

(vi) उपसंहार- राजनीतिक स्वार्थ और प्रादेशिक अहंकार से आहत होते हुए भी हिन्दी चुपचाप प्रसार के मार्ग पर बढ़ती जा रही है। वह धीरे-धीरे जन-सम्पर्क की भाषा का रूप ले रही है। चाहे नेता हो या अभिनेता जनता से संवाद करते समय उन्हें जनता की भाषा में ही बोलना पड़ता है। हिन्दी का किसी भारतीय भाषा से द्वेष या विरोध नहीं है। उसके राष्ट्रभाषा होने से किसी भाषा को कोई हानि नहीं होने वाली है। करोड़ों हिन्दीभाषियों से जिसे संवाद स्थापित करना है उसे हिन्दी बोलनी ही पड़ेगी। हिन्दी को उसका स्वाभाविक स्थान कब मिल पाएगा, यह बता पाना मुश्किल है।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

अथवा

(2) स्त्री सशक्तीकरण और शिक्षा

(i) प्रस्तावना- मानव समाज के दो पक्ष हैं- स्त्री और पुरुष। प्राचीनकाल से ही पुरुषों को स्त्री से अधिक अधिकार प्राप्त रहे हैं। स्त्री को पुरुष के नियंत्रण में रहकर ही काम करना पड़ा है। 'नारी नैवं स्वातंत्र्य अर्हति' कहकर स्मृतिकार मनु ने स्त्री को बन्धन में रखने का मार्ग खोल दिया है, किन्तु वर्तमान शताब्दी प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ने का समय है। स्त्री भी पुराने बन्धनों से मुक्त होकर आगे की ओर बढ़ रही है।

(ii) महिलाओं की प्रगति- स्वतंत्रता प्राप्त होने के पश्चात् भारत निरन्तर प्रगति कर रहा है। महिलाएँ किसी देश की आधी शक्ति होती हैं। जब तक महिलाओं की प्रगति न हो तब तक देश की प्रगति अधूरी होती है। भारत की तथाकथित प्रगति और विकास भी अपूर्ण है। उद्योग-व्यापार विभिन्न सेवाओं, सामाजिक संगठनों तथा राजनैतिक दलों में महिलाओं की उपस्थिति का प्रतिशत बहुत कम है। चुनाव के समय राजनैतिक दल उन्हें अपना उम्मीदवार नहीं बनाते। लोकसभा तथा विधानसभाओं में महिलाओं के लिए स्थान सुरक्षित करने का बिल पेश ही नहीं हो पाता। पुरुष नेता उन्हें वहाँ देखना ही नहीं चाहते।

(iii) स्त्री सशक्तीकरण की आवश्यकता– आज के समाज में स्त्री को देवी, पूज्य, मातृ शक्ति आदि कहकर भरमाया जाता है। वैसे उसे कदम-कदम पर अपनी कमजोरी और उसके कारण सामने आने वाली समस्याओं का सामना करना पड़ता है। घर तथा सभी उसकी कमजोरी का लाभ उठाते हैं। वर्ष 2002 से 2022 के बीच महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों में 69 प्रतिशत वृद्धि हुई है। अत: स्त्री सशक्तीकरण की समाज में आवश्यकता है।

(iv) स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और महत्व- भारतीय नारियों में शिक्षा का प्रतिशत बहुत कम है। शिक्षा ही महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर सकती है। शिक्षित होने पर ही उनमें वह क्षमता विकसित हो सकती है कि वह किसी क्षेत्र में सफलतापूर्वक काम कर सकें। घर के बाहर जाकर काम करने के लिए ही नहीं घर में परिवार के दायित्वों का निर्वाह करने के लिए स्त्री शिक्षा आवश्यक है। शिक्षित महिला अपने बच्चों का मार्गदर्शन अच्छी तरह करके उनका तथा देश का भविष्य सँभाल सकती हैं। यद्यपि कुछ महिलाएँ प्रशासन, शिक्षण, चिकित्सा विज्ञान, राजनीति आदि क्षेत्रों में आगे आई हैं और अच्छा काम किया है। वे पुलिस और सेना में भी काम कर रही हैं किन्तु उनकी संख्या अभी बहुत कम है। शिक्षा के अवसरों के विस्तार से उनको शिक्षित करने से विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति नि:संदेह बढ़ेगी।

(v) उपसंहार- शिक्षा से ही महिलाएँ शक्ति अर्जित करेंगी। शिक्षित और सशक्त महिलाएँ देश और समाज को भी शक्तिशाली बनाएँगी। इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाना जरूरी है। शिक्षण संस्थाओं में उनके लिए स्थान आरक्षित होना तथा उनको आर्थिक सहयोग और सहायता दिया जाना भी परमावश्यक है।

अथवा

(3) सूचना एवं संचार की महाक्रान्ति : इण्टरनेट

(i) प्रस्तावना- वर्तमान काल में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का असीमित उपयोग है। अब ऐसे अनेक उपकरण आ गये हैं, जिनसे सारे विश्व से तत्काल सम्पर्क साधा जा सकता है। सूचना-संचार एवं मनोरंजन आदि के लिए अब कम्प्यूटर एवं सेलफोन का जो अन्तरजाल प्रयुक्त हो रहा है, उसे इण्टरनेट कहते हैं। परस्पर सूचना-सम्प्रेषण एवं मनोरंजन का सुगम साधन होने से इण्टरनेट के प्रति युवाओं में विशेष आकर्षण बढ़ रहा है।

(ii) इण्टरनेट से आशय- इण्टरनेट का आशय विश्व के करोड़ों कम्प्यूटरों को परस्पर जोड़ने वाला ऐसा 'अन्तर-संजाल' है जो क्षणभर में समस्त जानकारियाँ उपलब्ध करा देता है। यह कम्प्यूटरों एवं सेलफोनों द्वारा सूचना आदान-प्रदान की प्रणाली है। इसमें प्रत्येक इण्टरनेट कम्प्यूटर 'होस्ट' कहलाता है और यह स्वतन्त्र रूप से डाउनलोड किया जाता है। अब नवीनतम स्मार्टफोनों के सहारे इण्टरनेट और भी सुगम हो गया है। रजिस्ट्रेशन, संचालन एवं इण्टरनेट के प्रसार हेतु वेबसाइटों की संरचना, उनका डाउनलोड करने से सम्बन्धित विविध सॉफ्टवेयरों का निर्माण किया गया है। अब तो वीडियो, ऑडियो, गेम्स, डेस्कटॉप, वॉलपेपर, फोटोग्राफ, ई-बुक्स, जी-मेल आदि अनेक बातों का परिचालन इण्टरनेट से हो रहा है। इण्टरनेट का ब्राउजर ओपन करते ही पंजीकृत वेब के द्वारा मनचाही जानकारी क्षणभर में घर-बैठे ही मिल जाती है। 'इण्टरनेट' या 'नेट' सूचना-संचार का तीव्र-प्रोसेसिंग माध्यम कहलाता है।

(iii) इण्टरनेट से लाभ- इण्टरनेट से अनेक लाभ हैं। परस्पर विचार-विनिमय, सूचनाओं का आदान-प्रदान, ज्ञान-प्रसार एवं विविध मनोरंजन के साधन इससे प्राप्त हो जाते हैं। इससे अखबारों या प्रिन्ट मीडिया के समाचार पढ़ने, दुनियाभर की परिचर्चाओं में भाग लेने, पुस्तकों एवं व्यक्ति विशेष की जानकारी हासिल करने में सुविधा रहती है। इससे कुछ हानियाँ भी हैं, परन्तु इससे असीमित लाभ होने से यह अत्यधिक लोकप्रिय माध्यम है।

(vi) सदुपयोग की समझ- इण्टरनेट द्वारा व्यापारिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं व्यक्तिगत सारे काम सध जाते हैं। परन्तु इससे वायरस, स्पाईवेयर तथा एडवेयर के कारण दुरुपयोग हो जाता है। अत: फ्री-डाउनलोड करने में सावधानी रखनी पड़ती है। विद्यार्थियों को इसका सदुपयोग ज्ञान-भण्डार की दृष्टि से करना चाहिए।

(v) उपसंहार- इण्टरनेट का वर्तमान में तीव्रता से विकास हो रहा है। इस पर कई तरह के सॉफ्टवेयर मुफ्त में डाउनलोड किये जा सकते हैं। यह सूचना-संचार का चमत्कारी साधन है तथा सामाजिक-आर्थिक प्रगति में इसकी उपयोगिता अपरिहार्य बन गई है।

अथवा

(4) राजस्थान में गहराता जल-संकट

(i) जल का महत्त्व व भूमिका- पंचभौतिक पदार्थों में पृथ्वी के बाद जल तत्त्व का महत्त्व सर्वाधिक माना गया है। मंगल आदि अन्य ग्रहों पर जल के अभाव से ही जीवन एवं वनस्पतियों का विकास नहीं हो पाया है- ऐसा नवीनतम खोजों से स्पष्ट हो गया

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

है। धरती पर ऐसे कई भू-भाग हैं जहाँ पर जलाभाव से प्राणियों को कष्टमय जीवन-यापन करना पड़ता है। राजस्थान प्रदेश का अधिकतर भू-भाग जल-संकट से सदा ग्रस्त रहता है। अवर्षण होने पर यह संकट और भी बढ़ जाता है।

(ii) जल-संकट की स्थिति- राजस्थान में प्राचीन काल में सरस्वती नदी प्रवाहित होती थी, जो अब धरती के गर्भ में विलुप्त हो गई। यहाँ पर अन्य कोई ऐसी नदी नहीं बहती है, जिससे जल-संकट का निवारण हो सके। चम्बल एवं माही आदि नदियाँ राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी कुछ भाग को ही हरा-भरा रखती हैं। इसकी पश्चिमोत्तर भूमि तो एकदम निर्जल है। इसी कारण यहाँ पर रेगिस्तान बढ़ रहा है। भूगर्भ में जो जल है, वह भी काफी नीचे है। श्रीगंगानगर जिले में से होकर इन्दिरा गाँधी नहर के द्वारा जो जल राजस्थान के पश्चिमोत्तर भाग में पहुँचाया जा रहा है, उसकी स्थिति भी सन्तोषप्रद नहीं है। पूर्वोत्तर राजस्थान में हरियाणा से जो पानी मिलता है, वह भी जलापूर्ति नहीं कर पाता है। इस कारण राजस्थान में जल-संकट की स्थिति सदा ही बनी रहती है।

(iii) जल-संकट के कारण- राजस्थान में पहले ही शुष्क मरुस्थलीय भू-भाग होने से जलाभाव है, फिर उत्तरोत्तर आबादी बढ़ रही है और औद्योगिक गति भी बढ़ रही है। यहाँ के शहरों एवं बड़ी औद्योगिक इकाइयों में भूगर्भीय जल का दोहन बड़ी मात्रा में हो रहा है। खनिज सम्पदा यथा संगमरमर, ग्रेनाइट, इमारती पत्थर, चूना पत्थर आदि के विदोहन से भी धरती का जल स्तर गिरता जा रहा है। शहरों में कंकरीट डामर आदि के निर्माण कार्यों से धरती के अन्दर वर्षा का पानी नहीं जा पाता है। पुराने कुएँ, बावड़ी आदि की अनदेखी करने से जल स्रोत सूख गये हैं। पिछले कुछ वर्षों से राजस्थान में वर्षा भी अत्यल्प मात्रा में हो रही है। इन सब कारणों से यहाँ पर जल-संकट गहराता जा रहा है।

(iv) जल संकट के समाधान हेतु सुझाव- राजस्थान में बढ़ते हुए जल-संकट के समाधान के लिए ये उपाय किये जा सकते हैं-

(1) भूगर्भ के जल का असीमित विदोहन रोका जावे।

(2) खनिज सम्पदा के विदोहन को नियन्त्रित किया जावे।

(3) शहरों में वर्षा के जल को धरती के गर्भ में डालने की व्यवस्था की जावे।

(4) बाँधों एवं एनीकटों का निर्माण, कुओं एवं बावड़ियों को अधिक गहरा और कच्चे तालाबों-पोखरों को अधिक गहरा-चौड़ा किया जावे।

(5) पंजाब-हरियाणा-गुजरात में बहने वाली नदियों का जल राजस्थान में लाने के प्रयास किये जावें। ऐसे उपाय करने से निश्चय ही राजस्थान में जल-संकट का निवारण हो सकता है।

(v) उपसंहार- "रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून' अर्थात् पानी के बिना जन-जीवन अनेक आशंकाओं से घिरा रहता है। सरकार को तथा समाज-सेवी संस्थाओं को विविध स्रोतों से सहायता लेकर राजस्थान में जल संकट के निवारणार्थ प्रयास करने चाहिए।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan कर आज ही 'उत्कर्ष एप' डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• LIVE & Recorded Classes • English & Hindi Medium

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com